

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 17, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. मध्यकालीन भारत में भक्ति परंपराओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कई भक्ति परंपराओं के उद्भव ने क्षेत्रीय भाषाओं और विविध सामाजिक परिवेशों के माध्यम से भक्ति पद्धतियों को विकसित करने में सक्षम बनाया, जिससे धार्मिक अभिव्यक्ति की संस्कृतनिष्ठ ज्ञान पर विशेष निर्भरता कम हो गई।
2. भक्ति आंदोलन एक एकल, केंद्रीय रूप से संगठित धार्मिक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता था जिसके सिद्धांत, संस्थागत संरचनाएं और सामाजिक उद्देश्य उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से एक समान थे।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या है।
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं है।
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 सही है। भक्ति परंपराओं ने क्षेत्रीय भाषाओं, भक्ति कविता, संगीत और पूजा के व्यक्तिगत रूपों के माध्यम से धार्मिक अभिव्यक्ति की संभावनाओं का काफी विस्तार किया। संतों और कवियों ने केवल विशिष्ट संभ्रांत संस्कृत परंपराओं पर निर्भर रहने के बजाय समाज के व्यापक वर्गों के लिए सुलभ भाषाओं में रचनाएँ कीं। हालाँकि, इसका यह अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि भक्ति ने केवल संस्कृत या ब्राह्मणवादी परंपराओं को खारिज कर दिया। क्षेत्रीय भक्ति परंपराओं और स्थापित धार्मिक संस्थानों के बीच संबंध काफी अधिक जटिल थे।

कथन 2 गलत है। पूरे भारत में एक समान धर्मशास्त्र या संस्थागत संरचना वाला कोई एकल, केंद्रीय रूप से संगठित भक्ति आंदोलन नहीं था। "भक्ति आंदोलन" शब्द विभिन्न समय और स्थानों पर उभरने वाली विविध परंपराओं को समाहित करता है।

दक्षिण भारत के आलवार और नयनार, वीरशैव/लिंगायत परंपरा, उत्तर भारत की वैष्णव परंपराएं, संत परंपराएं और कबीर, मीराबाई, सूरदास, तुलसीदास और चैतन्य जैसे व्यक्तित्वों से जुड़ी भक्ति परंपराएं अपने धार्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक संदर्भों और संस्थागत संगठन के रूपों में काफी भिन्न थीं।

कुछ परंपराओं ने जाति पदानुक्रम और अनुष्ठानिक प्राधिकरण के पहलुओं को चुनौती दी, जबकि अन्य ने व्यापक भक्ति चौखटों के भीतर काम किया जो आवश्यक रूप से मौजूदा सामाजिक संरचनाओं को खारिज नहीं करते थे।

गहरा विश्लेषणात्मक बिंदु यह है कि क्षेत्रीयकरण और धार्मिक परिवर्तन आपस में जुड़े हुए थे लेकिन क्षेत्रीय रूप से भिन्न प्रक्रियाएं थीं। भक्ति ने भक्तिपूर्ण भागीदारी के नए रूप प्रदान किए, लेकिन इसके सामाजिक परिणाम समय और स्थान के अनुसार अलग-अलग रहे।

इसलिए, सही उत्तर (c) है।

प्रश्न 2 निम्नलिखित में से कौन सा इकोटोन (संक्रमणिका) के पारिस्थितिक महत्व को सबसे अच्छी तरह से समझाता है?

- (a) वे पूरी तरह से अलग-थलग पारिस्थितिक तंत्र हैं जिनमें आस-पास के पारिस्थितिक तंत्र की प्रजातियां जीवित नहीं रह सकती हैं।
- (b) वे दो पारिस्थितिक तंत्रों के बीच के संक्रमण क्षेत्र हैं जिनमें दोनों आस-पास के पारिस्थितिक तंत्रों की प्रजातियों के साथ-साथ विशेष रूप से संक्रमणकालीन परिस्थितियों के अनुकूल जीव भी हो सकते हैं।
- (c) वे ऐसे पारिस्थितिक तंत्र हैं जिनमें अनिवार्य रूप से उन दोनों पारिस्थितिक तंत्रों की तुलना में कम जैव विविधता होती है जिन्हें वे अलग करते हैं।
- (d) वे विशुद्ध रूप से मानव भूमि-उपयोग प्रथाओं के माध्यम से बनाए गए कृत्रिम पारिस्थितिक सीमाएं हैं।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: एक इकोटोन (संक्रमणिका) दो अलग-अलग पारिस्थितिक तंत्रों या पारिस्थितिक समुदायों के बीच का एक संक्रमण क्षेत्र होता है। इसमें दोनों आस-पास के पारिस्थितिक तंत्रों की विशिष्ट प्रजातियों के साथ-साथ संक्रमण क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थितियों के अनुकूल विशेष प्रजातियां भी शामिल हो सकती हैं।

उदाहरण के लिए, एक जंगल और घास के मैदान के बीच का संक्रमण दोनों प्रणालियों की पारिस्थितिक विशेषताओं को प्रदर्शित कर सकता है, जबकि मध्यवर्ती परिस्थितियों के लिए विशेष रूप से अनुकूलित जीवों का समर्थन कर सकता है।

इकोटोन कभी-कभी कोर प्रभाव (एज इफेक्ट) प्रदर्शित कर सकते हैं, जिसके तहत प्रजातियों की विविधता या प्रचुरता आस-पास के समुदायों की तुलना में अधिक हो सकती है क्योंकि दोनों पारिस्थितिक तंत्रों के जीव वहां पाए जा सकते हैं और अतिरिक्त कोर-विशेषज्ञ प्रजातियां भी मौजूद हो सकती हैं।

विकल्प (a) गलत है क्योंकि इकोटोन सटीक रूप से आस-पास की पारिस्थितिक प्रणालियों के बीच बातचीत द्वारा विशेषता प्राप्त करते हैं।

विकल्प (c) गलत है क्योंकि इकोटोन में अनिवार्य रूप से कम जैव विविधता नहीं होती है। उपयुक्त परिस्थितियों में, प्रजातियों के ओवरलैप और कोर प्रभाव के कारण जैव विविधता वास्तव में बढ़ सकती है।

विकल्प (d) गलत है क्योंकि इकोटोन मुख्य रूप से प्राकृतिक पारिस्थितिक संक्रमण क्षेत्र हैं, हालांकि मानवीय गतिविधियां पारिस्थितिक सीमाओं का निर्माण या संशोधन कर सकती हैं।

UPSC-स्तरीय वैचारिक जाल पारिस्थितिक तंत्रों को पूरी तरह से कठोर सीमाओं वाली संस्थाओं के रूप में मानना है। वास्तव में, पारिस्थितिक सीमाएं अक्सर क्रमिक और गतिशील होती हैं, जिनमें पड़ोसी समुदायों के बीच पर्याप्त तालमेल होता है।

इसलिए, (b) सही है।

प्रश्न 3 राष्ट्रीय आय लेखांकन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नाममात्र जीडीपी (Nominal GDP) में वृद्धि का अनिवार्य रूप से यह अर्थ नहीं है कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की भौतिक मात्रा में तदनुसंगी वृद्धि हुई है।
2. वास्तविक जीडीपी (Real GDP) कीमतों में परिवर्तनों के प्रभाव को हटाकर उत्पादन की मात्रा में परिवर्तनों को अलग करने का प्रयास करती है।

3. यदि नाममात्र जीडीपी बढ़ती है जबकि वास्तविक जीडीपी अपरिवर्तित रहती है, तो नाममात्र जीडीपी में संपूर्ण वृद्धि रोजगार में वृद्धि का प्रतिनिधित्व करनी चाहिए।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। नाममात्र जीडीपी वर्तमान कीमतों पर अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापती है। इसलिए, इसकी वृद्धि वास्तविक उत्पादन में वृद्धि, कीमतों में वृद्धि, या दोनों के संयोजन के परिणामस्वरूप हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई अर्थव्यवस्था बिल्कुल समान मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करती है लेकिन उनकी कीमतें 10% बढ़ जाती हैं, तो नाममात्र जीडीपी बढ़ सकती है भले ही उत्पादन की भौतिक मात्रा अपरिवर्तित रहे।

कथन 2 सही है। वास्तविक जीडीपी एक चुने गए आधार वर्ष की कीमतों का उपयोग करके या समकक्ष स्थिर-मूल्य पद्धति के माध्यम से उत्पादन को मापती है। इसलिए यह केवल मूल्य आंदोलनों के कारण होने वाले परिवर्तनों से उत्पादन मात्रा में परिवर्तनों को अलग करने का प्रयास करती है। आर्थिक विकास की व्याख्या के लिए यह अंतर आवश्यक है। यदि नाममात्र जीडीपी 12% बढ़ती है जबकि वास्तविक जीडीपी केवल 5% बढ़ती है, तो यह अंतर विशुद्ध रूप से अतिरिक्त वास्तविक उत्पादन के बजाय मुख्य रूप से मूल्य स्तर में परिवर्तनों से जुड़ा होता है।

कथन 3 गलत है। यदि नाममात्र जीडीपी बढ़ती है जबकि वास्तविक जीडीपी अपरिवर्तित रहती है, तो इस वृद्धि को उच्च कीमतों द्वारा समझाया जा सकता है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि रोजगार में वृद्धि हुई है। वास्तव में, उत्पादकता, श्रम मांग और अन्य आर्थिक स्थितियों के आधार पर, रोजगार अपरिवर्तित रह सकता है या घट भी सकता है।

यह प्रश्न तीन अलग-अलग समष्टि अर्थशास्त्र अवधारणाओं का परीक्षण करता है: नाममात्र जीडीपी → वर्तमान-मूल्य मूल्य वास्तविक जीडीपी → मुद्रास्फीति-समायोजित उत्पादन माप रोजगार → श्रम-बाजार का परिणाम

ये चर परस्पर संबंधित हैं लेकिन विनिमय योग्य संकेतक नहीं हैं। इस प्रकार, दो कथन सही हैं — (b)।

प्रश्न 4. भारतीय संसद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोई विधेयक केवल संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित होने से अधिनियम नहीं बन जाता; राष्ट्रपति की सहमति से संबंधित संवैधानिक आवश्यकताओं को भी पूरा किया जाना चाहिए।
2. एक साधारण विधेयक के मामले में, राष्ट्रपति पुनर्विचार के लिए विधेयक को संसद को वापस लौटा सकते हैं, लेकिन यदि संसद इसे दोबारा पारित कर देती है, तो राष्ट्रपति सहमति देने के लिए संवैधानिक रूप से बाध्य हैं।
3. किसी विधेयक को पुनर्विचार के लिए लौटाने की राष्ट्रपति की शक्ति धन विधेयक पर भी समान रूप से लागू होती है।

4. एक संविधान संशोधन विधेयक, अनुच्छेद 368 के अनुसार विधिवत पारित होने के बाद, राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जिन्हें सहमति देना संवैधानिक रूप से आवश्यक है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1, 2 और 4 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। केवल संसदीय पारित होना विधायी प्रक्रिया को पूरा नहीं करता है। अनुच्छेद 111 के तहत, संसद द्वारा पारित विधेयक को सहमति के लिए राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। सहमति मिलने पर, विधेयक कानून बन जाता है, जो कानून की उस श्रेणी पर लागू संवैधानिक व्यवस्था के अधीन होता है।

कथन 2 सही है। धन विधेयक के अलावा किसी अन्य विधेयक के मामले में, राष्ट्रपति पुनर्विचार के लिए विधेयक को वापस लौटा सकते हैं। यदि संसद संशोधनों के साथ या उसके बिना विधेयक को फिर से पारित करती है, तो राष्ट्रपति अनुच्छेद 111 के तहत पुनर्विचार किए गए विधेयक पर सहमति नहीं रोक सकते हैं। महत्वपूर्ण अंतर राष्ट्रपति की पुनर्विचार की शक्ति और पूर्ण वीटो (निरपेक्ष वीटो) के बीच है।

कथन 3 गलत है। अनुच्छेद 111 विशेष रूप से धन विधेयक को पुनर्विचार के लिए वापस लौटाने की राष्ट्रपति की शक्ति से बाहर रखता है। धन विधेयक को या तो सहमति दी जा सकती है या सहमति रोकी जा सकती है, लेकिन इसे इस विशेष संवैधानिक तंत्र के तहत वापस नहीं लौटाया जा सकता है।

कथन 4 सही है। अनुच्छेद 368(2) में प्रावधान है कि संविधान संशोधन विधेयक संसद द्वारा विधिवत पारित होने के बाद, और जहां आवश्यक हो राज्य विधानमंडलों की अपेक्षित संख्या द्वारा अनुसमर्थित होने के बाद, राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जो विधेयक पर सहमति देंगे।

इसलिए यह प्रश्न निम्नलिखित के बीच अंतर का परीक्षण करता है:

- साधारण विधेयक;
- धन विधेयक; और
- संविधान संशोधन विधेयक।

राष्ट्रपति की विधायी शक्तियाँ इन श्रेणियों में समान नहीं हैं। इसलिए अनुच्छेद 111 को एक एकल समान प्रक्रिया के रूप में देखना भ्रामक है। इसलिए, तीन कथन सही हैं — (c)।

प्रश्न 5

नीचे दिए गए अभिकथन (Assertion) और दो कारणों (Reasons) पर विचार कीजिए:

अभिकथन (Assertion): एक प्रमुख पर्वत श्रृंखला के पवनमुखी (windward) ढाल पर स्थित क्षेत्र में उसी श्रृंखला के लीवर्ड (leeward/पवनविमुख) ढाल पर स्थित क्षेत्र की तुलना में काफी अधिक वर्षा हो सकती है।

कारण I (Reason I): जैसे ही नम हवा पवनमुखी ढाल के साथ ऊपर उठने के लिए मजबूर होती है, यह फैलती है और रुद्धोष्म (adiabatically) रूप से ठंडी होती है, जो सघनता और वर्षा को बढ़ावा देती है।

कारण II (Reason II): लीवर्ड ढाल की ओर नीचे उतरने के बाद, हवा आमतौर पर गर्म और अपेक्षाकृत शुष्क हो जाती है, जो वृष्टि-छाया (rain-shadow) क्षेत्र के विकास में योगदान दे सकती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों ही अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं।
- (b) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण I ही अभिकथन की सही व्याख्या करता है।
- (c) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण II ही अभिकथन की सही व्याख्या करता है।
- (d) कारण I सही है, लेकिन कारण II गलत है।

उत्तर: (a)

विस्तृत व्याख्या: अभिकथन सही है और पर्वतीय वर्षा (orographic precipitation) और वृष्टि-छाया प्रभाव की भौगोलिक घटना का वर्णन करता है।

कारण I सही है। जब नमी से भरी हवा किसी पर्वतीय बाधा से टकराती है, तो वह पवनमुखी ढाल के साथ ऊपर उठने के लिए मजबूर होती है। जैसे-जैसे हवा ऊपर उठती है, वायुमंडलीय दबाव कम हो जाता है और हवा फैलती है। इस फैलाव के कारण रुद्धोष्म शीतलन (adiabatic cooling) होता है। जब हवा अपने ओसांक (dew point) तक पहुँचती है, तो सघनता होती है, जिससे बादल और वर्षा उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप, पवनमुखी ढालों पर बहुत अधिक वर्षा हो सकती है, विशेष रूप से जहाँ नम समुद्री हवा लगातार किसी पर्वतीय बाधा से टकराती है।

कारण II भी सही है। पर्वत शिखर को पार करने के बाद, लीवर्ड ढाल पर नीचे उतरने वाली हवा संपीड़न और गर्मी से गुजरती है। इसकी सापेक्ष आर्द्रता आमतौर पर कम हो जाती है, और इसलिए लीवर्ड क्षेत्र में काफी कम वर्षा होती है। यह विशिष्ट वृष्टि-छाया प्रभाव पैदा करता है।

इसलिए दोनों कारण अभिकथन से कारण-कार्य के रूप में जुड़े हुए हैं। एक क्लासिक उदाहरण पश्चिमी घाट द्वारा प्रदान किया जाता है, जहाँ पश्चिमी ढालों पर दक्षिण-पश्चिम मानसून से भारी वर्षा होती है, जबकि श्रृंखला के पूर्व के क्षेत्र तुलनात्मक रूप से शुष्क होते हैं क्योंकि वे आंशिक रूप से वृष्टि-छाया क्षेत्र में आते हैं।

यह घटना एक महत्वपूर्ण भौगोलिक सिद्धांत को दर्शाती है: पर्वतीय बाधाएं पूरे क्षेत्र में समान रूप से वर्षा को बढ़ाने या घटाने के बजाय स्थानिक रूप से वर्षा को पुनर्वितरित करती हैं। हालाँकि, वृष्टि-छाया प्रभाव की तीव्रता हवा की दिशा, पर्वत की ऊँचाई, नमी की मात्रा, वायुमंडलीय स्थिरता और मौसमी परिसंचरण जैसे कारकों पर निर्भर करती है।

इसलिए, कारण I और कारण II दोनों ही अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं। अतः, (a) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पहले पूर्णकालिक मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) के रूप में एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा की हाल ही में हुई नियुक्ति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह नियुक्ति ट्रस्ट के प्रशासनिक और परिचालन प्रबंधन को पेशेवर बनाने की दिशा में एक संस्थागत कदम का प्रतिनिधित्व करती है।
2. CEO राष्ट्रीय महत्व के धार्मिक बंदोबस्तों (endowments) के प्रशासन के लिए भारत के संविधान के तहत बनाया गया एक संवैधानिक पद है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

व्याख्या:

कथन 1 सही है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने सितंबर 2026 में सेवानिवृत्त एयर मार्शल जितेंद्र मिश्रा को अपना पहला पूर्णकालिक CEO नियुक्त किया। यह नियुक्ति ट्रस्ट के प्रशासनिक, परिचालन और अनुपालन तंत्र को मजबूत करने से जुड़ी हुई है। मिश्रा ने इससे पहले पश्चिमी वायु कमान के एयर ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ के रूप में कार्य किया था और अप्रैल 2026 में भारतीय वायु सेना से सेवानिवृत्त हुए थे।

कथन 2 गलत है। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के CEO का पद कोई संवैधानिक पद नहीं है। यह ट्रस्ट अयोध्या मामले में सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के तहत गठित एक अलग कानूनी/धार्मिक ट्रस्ट है; इसका CEO ट्रस्ट का एक आंतरिक प्रशासनिक पद है।

वैचारिक जाल राष्ट्रीय धार्मिक महत्व की संस्था को संवैधानिक या वैधानिक पद के साथ भ्रमित करना है। प्रशासनिक प्रमुखता अपने आप में संवैधानिक दर्जा प्रदान नहीं करती है।

प्रश्न 2. हाल ही में जारी किया गया 'रक्षा' (RAKSHA) दस्तावेज़ मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?

- (a) भारत में संचालित निजी सैन्य कंपनियों को विनियमित करने के लिए एक राष्ट्रीय ढांचा
- (b) वैश्विक साझेदारियों के लिए भारत का दीर्घकालिक रक्षा कूटनीति रोडमैप
- (c) विशेष रूप से अंतरिक्ष युद्ध से निपटने वाला एक त्रि-सेवा सिद्धांत (tri-service doctrine)
- (d) भारत के रक्षा पेंशन व्यय के पुनर्गठन के लिए एक वित्तीय ढांचा

उत्तर: (b)

व्याख्या:

'रक्षा' (RAKSHA) 3 सितंबर 2026 को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा जारी किया गया एक रक्षा कूटनीति दस्तावेज़ है। यह अगले दस वर्षों में भारत की वैश्विक रक्षा साझेदारियों के लिए एक रणनीतिक रोडमैप और दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसके व्यापक स्तंभों में रणनीतिक साझेदारी, क्षमता निर्माण, स्वदेशी रक्षा निर्यात और समुद्री सुरक्षा शामिल हैं।

एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण वैचारिक अंतर यह है कि RAKSHA विशुद्ध रूप से सैन्य परिचालन सिद्धांत के बजाय एक रक्षा कूटनीति ढांचा है। यह सुरक्षा सहयोग, रक्षा साझेदारी, क्षमता निर्माण, स्वदेशी रक्षा निर्माण और भारत की समुद्री-सुरक्षा भूमिका को एकीकृत करने का प्रयास करता है।

यह ढांचा हिंद महासागर क्षेत्र में एक शुद्ध सुरक्षा प्रदाता (Net Security Provider) और प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता (First Responder) के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करने की भी परिकल्पना करता है।

प्रश्न 3 2026 में देखे गए वैश्विक बॉन्ड बिकवाली (global bond sell-off) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बॉन्ड प्रतिफल (bond yields) में वृद्धि का तात्पर्य आम तौर पर मौजूदा निश्चित-कूपन बॉन्ड (fixed-coupon bonds) के बाजार मूल्य में गिरावट से है, यदि अन्य बातें समान रहें।
2. निरंतर मुद्रास्फीति की आशंकाएं लंबी अवधि के बॉन्ड प्रतिफल को बढ़ाने में योगदान दे सकती हैं क्योंकि निवेशक वास्तविक रिटर्न के क्षरण के लिए अधिक मुआवजे की मांग कर सकते हैं।
3. संप्रभु बॉन्ड प्रतिफल (sovereign bond yields) में वैश्विक वृद्धि व्यापक उधार लागतों को बढ़ाकर सरकारों, निगमों और परिवारों को प्रभावित कर सकती है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या: तीनों कथन सही हैं।

कथन 1 सही है। बॉन्ड की कीमतें और प्रतिफल (yields) आमतौर पर विपरीत दिशा में चलते हैं। जब नए जारी किए गए बॉन्ड उच्च प्रतिफल प्रदान करते हैं, तो मौजूदा कम-कूपन वाले बॉन्ड अपेक्षाकृत कम आकर्षक हो जाते हैं, जिससे उनके बाजार मूल्य में गिरावट आती है।

कथन 2 सही है। यदि निवेशकों को मुद्रास्फीति के उच्च रहने की उम्मीद है, तो वे भविष्य के ब्याज और मूलधन के भुगतानों की वास्तविक क्रय शक्ति में अपेक्षित कमी की भरपाई के लिए उच्च नाममात्र प्रतिफल (nominal yields) की मांग कर सकते हैं।

कथन 3 सही है। उच्च संप्रभु प्रतिफल वित्तीय प्रणाली के माध्यम से प्रसारित हो सकते हैं। सरकारी उधारी अधिक महंगी हो जाती है, कॉर्पोरेट उधारी लागत बढ़ सकती है, और घरेलू क्रेडिट स्थितियां सख्त हो सकती हैं।

2026 के वैश्विक बॉन्ड बिकवाली को मुद्रास्फीति की चिंताओं, उच्च ऊर्जा कीमतों, सख्त मौसमी नीति की उम्मीदों और उच्च सार्वजनिक ऋण एवं उधारी आवश्यकताओं पर चिंताओं के संयोजन से जोड़ा गया है। रॉयटर्स ने बताया कि इन दबावों के बीच प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सरकारी उधारी की लागत बहु-वर्षीय या बहु-दशकीय उच्च स्तर तक बढ़ गई थी।

गहरा UPSC-स्तरीय बिंदु यह है कि बॉन्ड-बाजार की बिकवाली केवल सरकारी प्रतिभूतियों में एक हलचल नहीं है। बेंचमार्क प्रतिफल के माध्यम से, यह बंधक (mortgages), कॉर्पोरेट ऋण, सरकारी उधारी और अर्थव्यवस्थाओं में संपत्ति के मूल्यांकन की मूल्य निर्धारण को प्रभावित कर सकता है।

प्रश्न 4. भारतीय बार काउंसिल (Bar Council of India - BCI) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. BCI मुख्य रूप से अधिवक्ता अधिनियम, 1961 (Advocates Act, 1961) से अपने वैधानिक कार्य प्राप्त करता है।
2. यह अधिवक्ताओं के लिए पेशेवर आचरण और शिष्टाचार के मानक निर्धारित करने के लिए अधिकृत है।
3. यह राज्य बार कौंसिलों पर सामान्य पर्यवेक्षण और नियंत्रण रखता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या: तीनों कथन सही हैं।

कथन 1 सही है। अधिवक्ता अधिनियम, 1961 भारतीय बार काउंसिल और राज्य बार कौंसिलों के लिए वैधानिक ढांचा प्रदान करता है। धारा 4 विशेष रूप से भारतीय बार काउंसिल से संबंधित है, जबकि धारा 7 इसके कार्यों की गणना करती है।

कथन 2 सही है। धारा 7 के तहत, BCI अधिवक्ताओं के लिए पेशेवर आचरण और शिष्टाचार के मानक निर्धारित करता है।

कथन 3 सही है। धारा 7 BCI को राज्य बार कौंसिलों पर सामान्य पर्यवेक्षण और नियंत्रण रखने का अधिकार भी देती है।

BCI के अन्य कार्यों में कानूनी शिक्षा को बढ़ावा देना, कानूनी शिक्षा के मानक निर्धारित करना, उन विश्वविद्यालयों को मान्यता देना जिनकी कानून की डिग्रियां नामांकन के लिए योग्य हैं, कानून सुधार को बढ़ावा देना और उसका समर्थन करना, और राज्य बार कौंसिलों द्वारा संदर्भित कुछ मामलों से निपटना शामिल है।

महत्वपूर्ण जाल BCI को केवल एक पेशेवर संघ (professional association) के रूप में मानना है। यह अधिवक्ता अधिनियम, 1961 के ढांचे के भीतर स्थापित एक वैधानिक नियामक निकाय (statutory regulatory body) है।

प्रश्न 5. एरो इंडिया 2027 (Aero India 2027) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एरो इंडिया रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा आयोजित एक द्विवार्षिक (biennial) एयरोस्पेस और रक्षा प्रदर्शनी है।
2. एरो इंडिया 2027 बेंगलुरु के वायु सेना स्टेशन येलहंका में आयोजित होने वाला है।
3. 2027 संस्करण को आधिकारिक तौर पर एरो इंडिया के 16वें संस्करण के रूप में वर्णित किया गया है।
4. यह आयोजन विशेष रूप से सैन्य कर्मियों और सरकारी अधिकारियों तक सीमित है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य परिचालन सैन्य प्रशिक्षण है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या: कथन 1, 2 और 3 सही हैं, जबकि कथन 4 गलत है।

कथन 1 सही है। एरो इंडिया भारत की प्रमुख द्विवार्षिक एयरोस्पेस प्रदर्शनी है, जिसे वायु सेना स्टेशन येलहंका, बेंगलुरु में रक्षा मंत्रालय के रक्षा उत्पादन विभाग द्वारा आयोजित किया जाता है।

कथन 2 सही है। एरो इंडिया 2027 वायु सेना स्टेशन येलहंका, बेंगलुरु में 8-12 फरवरी 2027 के लिए निर्धारित है।

कथन 3 सही है। आधिकारिक एरो इंडिया वेबसाइट एरो इंडिया 2027 को 16वें संस्करण के रूप में वर्णित करती है।

कथन 4 गलत है। एरो इंडिया विशेष रूप से सैन्य आयोजन नहीं है। यह रक्षा उद्योगों, एयरोस्पेस कंपनियों, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडलों, निवेशकों और अन्य हितधारकों को शामिल करने वाला एक मंच प्रदान करता है। 2027 के आयोजन में व्यावसायिक और जनता का सामना करने वाले घटक भी हैं, जिसमें विमानन उत्साही, छात्रों और आम जनता के लिए एक अनुभव क्षेत्र (Experience Zone) शामिल है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित भौगोलिक विवरण पर विचार कीजिए:

यह दक्षिणी दक्षिण अमेरिका का एक मुख्य रूप से ठंडा और शुष्क क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से एंडीज के पूर्व में स्थित है और अटलांटिक तट की ओर फैला हुआ है। इसकी शुष्कता प्रचलित पछुआ हवाओं (westerlies) पर एंडीज के वृष्टि-छाया (rain-shadow) प्रभाव से गहराई से प्रभावित है।

ऊपर वर्णित क्षेत्र कौन सा है?

- (a) अटाकामा मरुस्थल (Atacama Desert)
- (b) मोंटे मरुस्थल (Monte Desert)

(c) पैटागोनियन मरुस्थल (Patagonian Desert)

(d) सेचुरा मरुस्थल (Sechura Desert)

उत्तर: (c)

व्याख्या: सही उत्तर पैटागोनियन मरुस्थल (Patagonian Desert) है।

पैटागोनियन मरुस्थल, जिसे पैटागोनियन स्टेप भी कहा जाता है, मुख्य रूप से अर्जेन्टीना में एंडीज के पूर्व में स्थित है, जिसका परिदृश्य अटलांटिक महासागर की ओर फैला हुआ है। इसकी विशिष्ट शुष्कता एंडीज द्वारा निर्मित वृष्टि-छाया प्रभाव से गहराई से जुड़ी हुई है। नमी युक्त पछुआ हवाएं एंडीज से टकराती हैं, जिससे पश्चिमी तरफ वर्षा होती है, जबकि तुलनात्मक रूप से शुष्क हवा पूर्वी, लीवर्ड (पवनविमुख) दिशा में नीचे उतरती है।

मुख्य वैचारिक अंतर यह है:

- **अटाकामा मरुस्थल** → मुख्य रूप से उत्तरी चिली और दक्षिणी पेरू के प्रशांत तट के साथ; उपोष्णकटिबंधीय अवतलन (subtropical subsidence), ठंडी हम्बोल्ट धारा और तटीय वायुमंडलीय स्थितियों से अत्यधिक प्रभावित।
- **पैटागोनियन मरुस्थल** → दक्षिणी दक्षिण अमेरिका में एंडीज के पूर्व में; एंडीज के वृष्टि-छाया प्रभाव से गहराई से जुड़ा हुआ।
- **मोटे मरुस्थल** → मुख्य रूप से पैटागोनिया के उत्तर में/उससे सटे अर्जेन्टीना के शुष्क और अर्ध-शुष्क भागों में।
- **सेचुरा मरुस्थल** → मुख्य रूप से उत्तरी पेरू के तट के साथ।

इस प्रकार, दक्षिणी दक्षिण अमेरिका + एंडीज का पूर्व + वृष्टि-छाया + ठंडा शुष्क वातावरण का संयोजन विशेष रूप से पैटागोनियन मरुस्थल की ओर इशारा करता है।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS पेपर I – भूगोल

NCERT संदर्भ: कक्षा XI, भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत, अध्याय 4 – महासागरों और महाद्वीपों का वितरण / प्लेट विवर्तनिकी

प्रश्न 1. "प्लेट विवर्तनिकी ने भू-आकृतियों की समझ को पृथ्वी की सतह के मुख्य रूप से एक स्थैतिक विवरण से बदलकर उनके उद्भव और विकास की एक गतिशील व्याख्या में रूपांतरित कर दिया।" चर्चा कीजिए कि विभिन्न प्रकार की प्लेट सीमाएं किस प्रकार विपरीत भू-आकृतिक विशेषताओं का निर्माण करती हैं। यह भी स्पष्ट कीजिए कि एक ही प्लेट सीमा रचनात्मक और विनाशात्मक दोनों प्रकार की भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को क्यों जन्म दे सकती है।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

प्लेट विवर्तनिकी (Plate tectonics) पृथ्वी के स्थलमंडल (lithospheric architecture) के बड़े पैमाने के निर्माण और निरंतर विकास की व्याख्या करने के लिए एक एकीकृत ढांचा प्रदान करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, कठोर स्थलमंडल (lithosphere) कई प्रमुख और गौण प्लेटों में विभाजित है जो अपेक्षाकृत नमनीय दुर्बलतामंडल (asthenosphere) के ऊपर गति करती हैं। उनकी परस्पर क्रिया से भूकंप, ज्वालामुखी, पर्वत निर्माण, महासागरीय बेसिन और कई अन्य भू-आकृतिक विशेषताएं उत्पन्न होती हैं।

भू-आकृतियों और भूवैज्ञानिक गतिविधियों की प्रकृति काफी हद तक प्लेट सीमा के प्रकार पर निर्भर करती है।

1. अपसारी या रचनात्मक सीमाएं (Divergent or constructive boundaries)

अपसारी सीमाओं पर, दो प्लेटें एक-दूसरे से दूर जाती हैं। नीचे मौजूद मेंटल आंशिक रूप से पिघलता है और मैग्मा अलग होती प्लेटों द्वारा निर्मित स्थान को भरने के लिए ऊपर उठता है।

यह निर्मित करता है:

- मध्य-महासागरीय कटक (Mid-oceanic ridges), जैसे मध्य-अटलांटिक कटक;
- नई महासागरीय पर्पटी (oceanic crust);
- महाद्वीपीय क्षेत्रों में भ्रंश घाटियाँ (Rift valleys);
- उथले-केंद्र वाले भूकंप (Shallow-focus earthquakes);
- बेसाल्टिक ज्वालामुखी क्रिया (Basaltic volcanism)।

पूर्वी अफ्रीकी भ्रंश प्रणाली (East African Rift system) महाद्वीपीय रिफ्टिंग को दर्शाती है, जबकि मध्य-अटलांटिक कटक महासागरीय अपसरण का प्रदर्शन करती है।

इसलिए "रचनात्मक" शब्द उपयुक्त है क्योंकि यहाँ नए स्थलमंडल का निर्माण होता है। हालाँकि, यह प्रक्रिया भ्रंश, धंसाव और ज्वालामुखी क्रिया के माध्यम से मौजूदा महाद्वीपीय परिदृश्यों के लिए एक ही समय में विनाशात्मक (destructive) भी हो सकती है।

2. अभिसारी सीमाएं (Convergent boundaries)

अभिसारी सीमाएं विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनकी भू-आकृतिक अभिव्यक्ति परस्पर क्रिया करने वाली प्लेटों की प्रकृति पर निर्भर करती है।

महासागरीय-महाद्वीपीय सीमा पर, अधिक सघन महासागरीय प्लेट आमतौर पर महाद्वीपीय प्लेट के नीचे निमज्जित (subduct) हो जाती है। यह खाइयों (trenches), ज्वालामुखीय पर्वत श्रृंखलाओं और तीव्र भूकंपीयता को जन्म देती है। एंडीज (Andes) इसका एक क्लासिक उदाहरण प्रदान करता है।

महासागरीय-महासागरीय सीमा पर, एक महासागरीय प्लेट दूसरी के नीचे निमज्जित हो सकती है, जिससे गहरी समुद्री खाइयाँ और ज्वालामुखीय द्वीप चाप उत्पन्न होते हैं, जैसा कि पश्चिमी प्रशांत महासागर के भागों में देखा जाता है।

महाद्वीपीय-महाद्वीपीय सीमा पर, उनके अपेक्षाकृत कम घनत्व के कारण कोई भी प्लेट आसानी से गहरे निमज्जन में नहीं जाती है। इसके बजाय, क्रस्टल संकुचन, वलन और उत्थान से प्रमुख पर्वत प्रणालियों का निर्माण होता है। हिमालय (Himalayas) इसका क्लासिक उदाहरण है।

इस प्रकार, अभिसरण एक ही समय में विनाशात्मक और रचनात्मक दोनों है: निमज्जन के माध्यम से महासागरीय स्थलमंडल नष्ट हो सकता है, जबकि क्रस्टल संपीड़न और उत्थान के माध्यम से पर्वत और नई उच्चावच (relief) का निर्माण होता है।

3. संरक्षी या रूपांतरण सीमाएं (Transform boundaries)

रूपांतरण सीमाओं पर, प्लेटें एक-दूसरे के समानांतर क्षैतिज रूप से खिसकती हैं। यहाँ स्थलमंडल न तो महत्वपूर्ण रूप से बनता है और न ही नष्ट होता है। फिर भी, भ्रंशों के साथ यांत्रिक तनाव जमा हो सकता है और भूकंप के माध्यम से मुक्त हो सकता है।

सैन एंड्रियास भ्रंश (San Andreas Fault) एक सर्वविदित रूपांतरण सीमा का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए रूपांतरण सीमाएं प्रदर्शित करती हैं कि प्रमुख भू-आकृतिक और भूवैज्ञानिक परिणामों के लिए आवश्यक रूप से लंबवत गति या क्रस्टल निर्माण/विनाश की आवश्यकता नहीं होती है।

निष्कर्ष

प्लेट सीमाओं को कठोर श्रेणियों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए जो केवल एक प्रकार की भूवैज्ञानिक प्रक्रिया उत्पन्न करती हैं। अपसरण नई पर्पटी बनाता है लेकिन मौजूदा सतहों को खंडित और अस्थिर भी करता है; अभिसरण पहाड़ों का निर्माण करते हुए महासागरीय स्थलमंडल को नष्ट करता है; और रूपांतरण गति स्थलमंडलीय क्षेत्र को संरक्षित करते हुए महत्वपूर्ण भूकंपीय खतरों को जन्म देती है। प्लेट विवर्तनिकी का महत्व सटीक रूप से एक ही गतिशील ढांचे के भीतर इन विरोधाभासी दिखने वाली प्रक्रियाओं की व्याख्या करने की क्षमता में निहित है।

GS पेपर II – भारतीय राजनीति और राष्ट्र-निर्माण

NCERT संदर्भ: कक्षा XII, स्वतंत्रता के बाद भारत में राजनीति, अध्याय 4 – राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ

प्रश्न 2. "स्वतंत्रता के बाद के भारत में राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में न केवल प्रादेशिक एकीकरण शामिल था, बल्कि एक लोकतांत्रिक संवैधानिक ढांचे के भीतर विविधता का समायोजन भी शामिल था।" इस संदर्भ में राज्यों के भाषाई पुनर्गठन के महत्व का परीक्षण कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

स्वतंत्रता के बाद भारत का समेकन राष्ट्र-निर्माण में एक जटिल अभ्यास था। राजनीतिक एकीकरण के साथ-साथ अत्यधिक भाषाई, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय और जातीय विविधता को समायोजित करने की चुनौती भी शामिल थी। इस प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण विकासों में से एक राज्यों का पुनर्गठन था, विशेष रूप से भाषाई आधार पर।

स्वतंत्रता के समय, भारत की प्रशासनिक सीमाएं आवश्यक रूप से भाषाई या सांस्कृतिक पहचान के साथ संरेखित नहीं थीं। नेतृत्व को शुरू में डर था कि भाषाई राज्य राष्ट्रीय एकता की कीमत पर क्षेत्रीय पहचान को मजबूत कर सकते हैं। हालाँकि, बाद के अनुभवों ने प्रदर्शित किया कि क्षेत्रीय पहचान का लोकतांत्रिक समायोजन वास्तव में राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत कर सकता है।

भाषाई पुनर्गठन की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती वर्षों में भाषाई राज्यों की मांग जोर से उभरी। 1952 में पोर्टी श्रीरामुलु के उपवास और मृत्यु के बाद एक अलग आंध्र राज्य की मांग विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गई। इसके बाद 1953 में आंध्र राज्य का गठन किया गया।

इसके बाद सरकार ने 1953 में फज़ल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग (SRC) का गठन किया। आयोग ने 1955 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, और राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 ने भारत की आंतरिक सीमाओं का व्यापक पुनर्गठन किया।

भाषाई पुनर्गठन का महत्व

पहला, इसने क्षेत्रीय पहचान को संवैधानिक समायोजन प्रदान किया।

क्षेत्रीय चेतना को स्वाभाविक रूप से राष्ट्र-विरोधी मानने के बजाय, भारतीय राजनीतिक व्यवस्था ने धीरे-धीरे यह स्वीकार किया कि लोग भारतीय राष्ट्र के साथ पहचान बनाए रखते हुए मजबूत क्षेत्रीय पहचान भी रख सकते हैं।

दूसरा, इसने मनमानी प्रशासनिक सीमाओं से जुड़े राजनीतिक अलगाव को कम किया।

जब प्रशासन और राजनीतिक प्रतिनिधित्व भाषाई समुदायों के साथ अधिक निकटता से मेल खाने लगे, तो नागरिक लोकतांत्रिक संस्थाओं में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सके।

तीसरा, इसने भारतीय संघवाद की लचकता (flexibility) को प्रदर्शित किया।

भारतीय संघवाद को एक स्थायी रूप से स्थिर प्रादेशिक व्यवस्था के रूप में नहीं माना गया था। बदलती राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के जवाब में संवैधानिक और विधायी प्रक्रियाओं के माध्यम से राज्यों का पुनर्गठन किया जा सकता था।

चौथा, भाषाई राज्यों के परिणामस्वरूप भारत का विखंडन नहीं हुआ।

इसके बजाय, भाषाई आकांक्षाओं के समायोजन ने कई मामलों में क्षेत्रीय मांगों को अधिक कट्टरपंथी व्यवस्था-विरोधी आंदोलनों में बदलने से रोकने में मदद की।

हालाँकि, भाषाई पुनर्गठन ने क्षेत्रीय संघर्षों को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया। बाद के आंदोलनों से नए राज्यों का गठन हुआ, जिनमें 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात, 1966 में हरियाणा और बाद के चरणों में कई पूर्वोत्तर राज्य शामिल हैं।

क्रिटिकल आयाम

भाषाई पुनर्गठन भी एकता और विविधता के बीच के तनाव को दर्शाता है।

अत्यधिक केंद्रीकरण से अलगाव पैदा हो सकता था, जबकि असीमित विखंडन से प्रशासनिक और राजनीतिक कठिनाइयां पैदा हो सकती थीं। भारत का अनुभव दर्शाता है कि लोकतांत्रिक संस्थाएं इस तनाव को कम कर सकती हैं।

गहरा सबक यह है कि राष्ट्रीय एकीकरण के लिए आवश्यक रूप से सांस्कृतिक समरूपता (cultural homogenisation) की आवश्यकता नहीं होती है। एक बहुलवादी समाज संवैधानिक तंत्र बनाकर राष्ट्रीय एकता को बनाए रख सकता है जिसके माध्यम से क्षेत्रीय आकांक्षाएं वैध राजनीतिक अभिव्यक्ति प्राप्त करती हैं।

निष्कर्ष

इसलिए राज्यों का भाषाई पुनर्गठन केवल एक प्रशासनिक अभ्यास नहीं था। यह लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण में एक महत्वपूर्ण प्रयोग का प्रतिनिधित्व करता था। एक संवैधानिक ढांचे के भीतर विविधता को मान्यता देकर, भारत ने यह साबित किया कि एकरूपता के बजाय समायोजन के माध्यम से एकीकरण प्राप्त किया जा सकता है। भारत के संघीय मानचित्र का निरंतर पुनर्गठन इस दृष्टिकोण के अनुकूलनशील चरित्र को दर्शाता है।

NCERT संदर्भ: कक्षा XII, भारतीय समाज और कक्षा XI, भारतीय आर्थिक विकास — सुशासन अवधारणाओं के साथ पूरक

प्रश्न 3. "सेवोत्तम मॉडल लोक प्रशासन के ध्यान को सरकारी योजनाओं के वितरण से हटाकर नागरिकों द्वारा अनुभव की जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता पर केंद्रित करता है।" सेवोत्तम ढांचे के प्रमुख घटकों पर चर्चा कीजिए और भारत में नागरिक-केंद्रित शासन में सुधार के लिए इसकी प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

शासन की प्रभावशीलता का न्याय केवल खर्च किए गए धन की मात्रा या शुरू की गई योजनाओं की संख्या से नहीं किया जा सकता है। अंततः, नागरिक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता, पेंशन, प्रमाण पत्र, कल्याणकारी लाभ और शिकायत निवारण जैसी सार्वजनिक सेवाओं के माध्यम से राज्य का अनुभव करते हैं। सेवोत्तम मॉडल सार्वजनिक सेवा वितरण की गुणवत्ता और नागरिक-केंद्रितता में सुधार के लिए एक ढांचे के रूप में विकसित किया गया था।

सेवोत्तम (Sevottam) शब्द 'सेवा' और 'उत्तम' के विचारों को मिलाता है, जिसका अर्थ है सेवा में उत्कृष्टता।

प्रमुख घटक

यह ढांचा व्यापक रूप से तीन आपस में जुड़े तत्वों पर आधारित है।

1. नागरिक चार्टर (Citizen's Charter)

पहला घटक नागरिक चार्टर का निर्माण और प्रभावी कार्यान्वयन है।

एक सार्थक चार्टर में निम्नलिखित निर्दिष्ट होना चाहिए:

- प्रदान की जाने वाली सेवाएं;
- मानक और समय सीमा;
- सेवा प्रदाता की जिम्मेदारियां;
- जानकारी प्राप्त करने के तंत्र; और
- शिकायत और निवारण के रास्ते।

हालाँकि, यदि कोई चार्टर मापने योग्य सेवा मानकों के बिना केवल विभागीय वादों की सूची बनाता है तो उसका सीमित मूल्य होता है।

2. लोक शिकायत निवारण (Public Grievance Redressal)

दूसरे घटक में ऐसे तंत्र स्थापित करना शामिल है जिनके माध्यम से नागरिक सेवा विफलताओं की रिपोर्ट कर सकते हैं और उपचार प्राप्त कर सकते हैं।

एक प्रभावी शिकायत प्रणाली को निम्नलिखित प्रदान करना चाहिए:

- आसान पहुंच;
- समयबद्ध निपटान;
- स्पष्ट जिम्मेदारी;
- शिकायतों की ट्रैकिंग;

- वृद्धि तंत्र (escalation mechanisms); और
- आवर्ती शिकायतों से संस्थागत सीख।

इस प्रकार, शिकायत निवारण को केवल व्यक्तिगत शिकायतों को बंद नहीं करना चाहिए बल्कि प्रणालीगत कमियों की पहचान भी करनी चाहिए।

3. सेवा वितरण क्षमता (Service Delivery Capability)

तीसरा घटक लगातार सेवाएं प्रदान करने के लिए आवश्यक संगठनात्मक क्षमता से संबंधित है।

इसमें शामिल हैं:

- प्रक्रिया में सुधार;
- कर्मचारी प्रशिक्षण;
- प्रदर्शन की निगरानी;
- तकनीकी सहायता;
- संस्थागत जवाबदेही; और
- सेवा गुणवत्ता का निरंतर मूल्यांकन।

भारतीय शासन के लिए प्रासंगिकता

सेवोत्तम दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि भारत की शासन चुनौती में तेजी से कार्यान्वयन का अंतिम मील (last mile) शामिल है।

एक कल्याणकारी योजना में पर्याप्त बजटीय आवंटन हो सकता है लेकिन फिर भी खराब परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं:

- देरी;
- सूचना की विषमता (information asymmetry);
- बहिष्करण त्रुटियाँ (exclusion errors);
- प्रक्रियात्मक जटिलता;
- अपर्याप्त स्टाफिंग;
- कमजोर निगरानी; या
- खराब शिकायत निवारण तंत्र।

सेवोत्तम प्रशासनिक प्रश्न को "क्या योजना लागू की गई थी?" से हटाकर "क्या नागरिक वास्तव में प्रभावी ढंग से सेवा प्राप्त कर पाए?" पर स्थानांतरित करने का प्रयास करता है।

डिजिटल शासन ऑनलाइन आवेदनों, ट्रेकिंग प्रणालियों, इलेक्ट्रॉनिक सेवा वितरण और डेटा-आधारित निगरानी के माध्यम से इस ढांचे को मजबूत कर सकता है। हालाँकि, अत्यधिक डिजिटलीकरण स्वयं बहिष्करण पैदा कर सकता है यदि नागरिकों में कनेक्टिविटी, डिजिटल साक्षरता या सुलभ सहायता की कमी है।

इसलिए, नागरिक-केंद्रित शासन के लिए प्रौद्योगिकी और मानव संस्थागत क्षमता के संयोजन की आवश्यकता होती है।

चुनौतियां

अनौपचारिक नौकरशाही बाधाओं, कमजोर जवाबदेही, अवास्तविक सेवा मानकों, अपर्याप्त शिकायत क्षमता और सीमित प्रतिक्रिया तंत्र के कारण कार्यान्वयन कठिन बना हुआ है। यदि विभाग नागरिक चार्टर को प्रदर्शन मूल्यांकन से नहीं जोड़ते हैं तो वे प्रतीकात्मक दस्तावेज बन सकते हैं।

इसके अलावा, सेवा की गुणवत्ता का मूल्यांकन केवल विभागीय आउटपुट से नहीं बल्कि नागरिक परिणामों से किया जाना चाहिए।

आगे की राह

एक मजबूत सेवोत्तम-उन्मुख प्रणाली में शामिल होना चाहिए:

- मापने योग्य सेवा मानक;
- स्वतंत्र नागरिक प्रतिक्रिया;
- समयबद्ध शिकायत निवारण;
- जहां उपयुक्त हो सामाजिक लेखा परीक्षा (social audits);
- परिणाम-आधारित प्रदर्शन संकेतक;
- सरलीकृत प्रक्रियाएं;
- सहायता प्राप्त डिजिटल सेवाएं; और
- नागरिक चार्टर की नियमित समीक्षा।

निष्कर्ष

सेवोत्तम का महत्व सरकार-केंद्रित प्रशासन से नागरिक-केंद्रित सार्वजनिक सेवा वितरण में इसके दार्शनिक बदलाव में निहित है। इसका सफल कार्यान्वयन सार्वजनिक प्रशासन को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी और जवाबदेह बनाकर नागरिकों और संस्थाओं के बीच विश्वास को मजबूत कर सकता है।

GS पेपर IV – नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

प्रश्न 4. "सत्यनिष्ठा की परीक्षा तब नहीं होती जब नैतिक विकल्प स्पष्ट हों, बल्कि तब होती है जब प्रतिस्पर्धी वैध हित उपलब्ध हर विकल्प को नैतिक रूप से महंगा बना देते हैं।" लोक प्रशासन के उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। एक सिविल सेवक को ऐसी नैतिक दुविधाओं से कैसे निपटना चाहिए?

मॉडल उत्तर (Sample Answer)

लोक प्रशासन में नैतिक निर्णय लेना शायद ही कभी एक स्पष्ट रूप से सही और एक स्पष्ट रूप से गलत विकल्प के बीच चयन करने तक सीमित होता है। सिविल सेवक अक्सर ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जिनमें दो या दो से अधिक वैध मूल्य एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिए, पारदर्शिता गोपनीयता के साथ, प्रशासनिक दक्षता प्रक्रियात्मक निष्पक्षता के साथ, तत्काल राहत दीर्घकालिक स्थिरता के साथ, या राजनीतिक संवेदनशीलता संस्थागत तटस्थता के साथ संघर्ष कर सकती है।

इसलिए, सत्यनिष्ठा (Integrity) केवल नियमों का पालन करना नहीं है; इसमें प्रतिस्पर्धी दबावों के तहत भी नैतिक सिद्धांतों, पेशेवर कर्तव्यों और जनहित के बीच संगति शामिल होती है।

नैतिक दुविधाओं की प्रकृति

एक नैतिक दुविधा तब उत्पन्न होती है जब किसी व्यक्ति को प्रतिस्पर्धी नैतिक दायित्वों का सामना करना पड़ता है और वह उन सभी को एक साथ संतुष्ट नहीं कर सकता है।

प्राकृतिक आपदा के दौरान एक जिला प्रशासक पर विचार करें। खरीद प्रक्रियाओं का सख्त पालन जवाबदेही सुनिश्चित कर सकता है, लेकिन जीवन बचाने के लिए तत्काल आपातकालीन खरीद आवश्यक हो सकती है। इसके विपरीत, प्रक्रियाओं में अत्यधिक ढील भ्रष्टाचार के अवसर पैदा कर सकती है।

इसलिए दुविधा केवल "नियम बनाम कोई नियम नहीं" की नहीं है; यह निर्धारित करने के बारे में है कि अंतर्निहित सार्वजनिक उद्देश्य की रक्षा करते हुए नियमों को कैसे लागू किया जाना चाहिए।

सिविल सेवकों के लिए प्रासंगिक नैतिक सिद्धांत

- 1. जनहित (Public interest):** लोक प्रशासन का अंतिम उद्देश्य नागरिकों का कल्याण है। इसलिए निर्णयों का मूल्यांकन बड़े जनहित के परिणामों के आधार पर किया जाना चाहिए।
- 2. सत्यनिष्ठा (Integrity):** एक सिविल सेवक को व्यक्तिगत लाभ या पक्षपात के लिए सार्वजनिक प्राधिकरण का उपयोग करने से बचना चाहिए।
- 3. निष्पक्षता (Impartiality):** जाति, धर्म, राजनीतिक संबद्धता, व्यक्तिगत संबंधों या अन्य अप्रासंगिक विचारों के आधार पर लाभ और बोझ का आवंटन नहीं किया जाना चाहिए।
- 4. पारदर्शिता और जवाबदेही (Transparency and accountability):** सार्वजनिक संसाधनों से जुड़े निर्णयों की व्याख्या करने और उनकी जांच करने में सक्षम होना चाहिए।
- 5. करुणा (Compassion):** मानवीय परिस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता के बिना नियम-आधारित प्रशासन असंवेदनशील और अन्यायपूर्ण हो सकता है।

नैतिक दुविधाओं से कैसे निपटा जाना चाहिए?

एक सिविल सेवक एक संरचित प्रक्रिया का पालन कर सकता है:

1. पहला, सभी हितधारकों और प्रतिस्पर्धी हितों की पहचान करें।
2. दूसरा, कानूनी दायित्वों को केवल सुविधाजनक प्रशासनिक प्रथाओं से अलग करें।
3. तीसरा, शामिल मुख्य मूल्यों की पहचान करें—न्याय, निष्पक्षता, पारदर्शिता, करुणा, दक्षता, जवाबदेही और जन कल्याण।
4. चौथा, कार्रवाई के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों और उनके अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक परिणामों पर विचार करें।
5. पांचवां, उस विकल्प को चुनें जो संवैधानिक और कानूनी ढांचे के भीतर रहते हुए वैध जनहित को अधिकतम करता है।
6. छठा, जहाँ भी उपयुक्त हो, कारणों का दस्तावेजीकरण करें। दस्तावेजीकरण संस्थागत जवाबदेही की रक्षा करता है और मनमाने निर्णय लेने को हतोत्साहित करता है।

उदाहरण

मान लीजिए कि एक सरकारी अस्पताल में एक आपातकालीन बिस्तर खाली है और दो मरीजों को इसकी आवश्यकता है। एक मरीज पहले आया है, जबकि दूसरे मरीज को मृत्यु का काफी अधिक तात्कालिक जोखिम है।

एक यांत्रिक "पहले आओ-पहले पाओ" दृष्टिकोण प्रक्रियात्मक समानता की रक्षा कर सकता है, जबकि अधिक गंभीर मरीज को प्राथमिकता देना जीवन बचाने के नैतिक सिद्धांत को बेहतर ढंग से दर्शा सकता है। एक पारदर्शी, पूर्व-स्थापित ट्रियाज प्रोटोकॉल (triage protocol) व्यक्तिगत विवेक के बजाय इन प्रतिस्पर्धी विचारों का बेहतर तालमेल बिठा सकता है।

संवैधानिक नैतिकता (Constitutional morality)

भारतीय सिविल सेवकों के लिए, नैतिक आचरण को अंततः न्याय, समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों में निहित होना चाहिए। संवैधानिक नैतिकता विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होती है जब प्रशासनिक निर्णय संवेदनशील या वंचित समूहों को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

नैतिक प्रशासन का अर्थ विवेक (discretion) को समाप्त करना नहीं है; इसका अर्थ विवेक को सैद्धांतिक, पारदर्शी और जवाबदेह बनाना है। सत्यनिष्ठा तब प्रदर्शित होती है जब कोई अधिकारी केवल यह न समझा सके कि क्या निर्णय लिया गया था, बल्कि यह भी समझा सके कि यह कानून, संवैधानिक मूल्यों और वैध जनहित के साथ क्यों सुसंगत था।

GS पेपर III – समसामयिक मामले: जलवायु परिवर्तन

प्रश्न 5. "1.5°C की सीमा पार करने के बाद नीतिगत चुनौती इस सीमा को 'वापसी न होने वाले बिंदु' के रूप में देखने की नहीं है, बल्कि ओवरशूट (अतिक्रमण) के परिमाण और अवधि को कम करने की है।" UNEP की 'लिमिटिंग ओवरशूट' (Limiting Overshoot) रिपोर्ट के आलोक में, वैश्विक जलवायु प्रशासन, शमन और अनुकूलन के लिए "ओवरशूट, पीक एंड डिक्लाइन" मार्ग के निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।

मॉडल उत्तर (Sample Answer) Dream | Dare | Deliver

सितंबर 2026 में जारी UNEP की लिमिटिंग ओवरशूट रिपोर्ट, एक तेजी से महत्वपूर्ण जलवायु-नीति समस्या का समाधान करती है: यह संभावना कि वैश्विक तापमान बाद में संभावित रूप से घटने से पहले अस्थायी रूप से 1.5°C के तापमान लक्ष्य से अधिक हो जाएगा। रिपोर्ट का तर्क है कि 1.5°C से अधिक होने को पेरिस समझौते के उद्देश्य के परित्याग के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। इसके बजाय, ओवरशूट के परिमाण (magnitude) और अवधि (duration) को कम किया जाना चाहिए, जिसके बाद वैश्विक तापमान में गिरावट आए।

इस अवधारणा को "ओवरशूट, पीक एंड डिक्लाइन" (overshoot, peak and decline) मार्ग के रूप में समझा जा सकता है। वैश्विक तापमान पहले 1.5°C से अधिक होता है, एक शिखर (peak) पर पहुंचता है, और इसके बाद ग्रीनहाउस-गैस सांद्रता में निरंतर कमी और सावधानीपूर्वक प्रशासित कार्बन डाइऑक्साइड हटाने (CDR) के माध्यम से घटता है।

ओवरशूट का परिमाण क्यों मायने रखता है

मुख्य अंतर्दृष्टि यह है कि एक डिग्री का हर अतिरिक्त अंश मायने रखता है।

उच्चतम शिखर वार्षिक जोखिमों को बढ़ाता है:

- खाद्य सुरक्षा;
- जल उपलब्धता;
- मानव स्वास्थ्य;
- पारिस्थितिकी तंत्र;
- तटीय बस्तियां;
- बुनियादी ढांचा; और
- आर्थिक प्रणालियां।

इसी तरह, 1.5°C से ऊपर की लंबी अवधि जलवायु संबंधी टिपिंग पॉइंट (tipping points) और अनुकूलन सीमाओं को पार करने की संभावना को बढ़ाती है। UNEP उच्च वार्षिक से जुड़ी चिंताओं में प्रमुख बर्फ की चादरों, अमेजन वर्षावन और अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) को शामिल करने वाले जोखिमों की पहचान करता है।

इसलिए, उद्देश्य केवल बाद में तापमान में गिरावट हासिल करना नहीं हो सकता। शिखर (peak) को स्वयं कम से कम किया जाना चाहिए।

शमन (Mitigation) के लिए निहितार्थ

पहला प्राथमिक कार्य ग्रीनहाउस-गैस उत्सर्जन में तेजी से कमी लाना बना हुआ है।

इसके लिए आवश्यक है:

- जीवाश्म ईंधन से दूर तेजी से संक्रमण;
- कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में तेजी से कमी;
- मीथेन में उल्लेखनीय कमी;
- ऊर्जा दक्षता में सुधार;
- ऊर्जा आपूर्ति और मांग में परिवर्तन;
- कठिन-से-कम-होने वाले (hard-to-abate) क्षेत्रों का विकारोनीकरण; और
- जलवायु वित्त को मजबूत करना।

यह रिपोर्ट विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कार्बन डाइऑक्साइड हटाने (CDR) को उत्सर्जन में देरी का बहाना बनने से रोकती है। UNEP इस बात पर जोर देता है कि कार्बन डाइऑक्साइड हटाना तापमान में गिरावट में योगदान दे सकता है लेकिन यह तेजी से उत्सर्जन में कमी का विकल्प नहीं हो सकता।

कार्बन डाइऑक्साइड हटाने (CDR) की भूमिका

कार्बन डाइऑक्साइड हटाने में वनीकरण (afforestation) और वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को हटाने के बाद भंडारण के अन्य तरीके शामिल हो सकते हैं।

हालाँकि, CDR चुनौतियों को प्रस्तुत करता है जिनमें शामिल हैं:

- भूमि की आवश्यकताएं;

- कार्बन भंडारण का स्थायित्व;
- जैव विविधता पर प्रभाव;
- शासन (governance);
- मापन और सत्यापन;
- तकनीकी व्यवहार्यता; और
- खाद्य उत्पादन के साथ संभावित प्रतिस्पर्धा।

परिणामस्वरूप, CDR को गहरी उत्सर्जन कटौती की जगह लेने के बजाय उसका पूरक होना चाहिए।

अनुकूलन (Adaptation) आयाम

ओवरशूट अनुकूलन एजेंडे को भी बदल देता है।

भले ही तापमान बाद में कम हो जाए, समाजों को अपरिवर्तनीय या दीर्घकालिक प्रभावों का अनुभव हो सकता है। इसलिए अनुकूलन केवल प्रतिक्रियाशील होने के बजाय अग्रिम (anticipatory) होना चाहिए।

विकासशील देशों, विशेष रूप से संवेदनशील समुदायों के लिए, इसके लिए आवश्यक है:

- जलवायु-लचीला बुनियादी ढांचा;
- प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली;
- जलवायु-अनुकूल कृषि;
- हीट-एक्शन प्लान;
- जल सुरक्षा;
- आपदा-जोखिम में कमी; और
- जलवायु-अनुकूल शहरी नियोजन।

UNEP यह भी उजागर करता है कि अनुकूलन की सीमाएं हैं, विशेष रूप से जैसे-जैसे वार्मिंग बढ़ती है।

जलवायु न्याय और शासन

ओवरशूट का सवाल जलवायु न्याय से अविभाज्य है। जिन देशों और समुदायों ने ऐतिहासिक उत्सर्जन में अपेक्षाकृत कम योगदान दिया है, उन्हें असमान परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। परिणामस्वरूप, जलवायु शासन के लिए पर्याप्त वित्त, प्रौद्योगिकी सहयोग और क्षमता-निर्माण की आवश्यकता होती है।

यह रिपोर्ट बहुपक्षवाद (multilateralism) के महत्व को भी सुदृढ़ करती है। जलवायु परिवर्तन को केवल एकतरफा राष्ट्रीय कार्रवाई के माध्यम से प्रबंधित नहीं किया जा सकता है क्योंकि वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैसों और जलवायु प्रभाव राजनीतिक सीमाओं से परे जाते हैं।

निष्कर्ष

UNEP रिपोर्ट का महत्व नीतिगत चर्चा को एक द्विआधारी (binary) प्रश्न—"क्या दुनिया 1.5°C से नीचे रहेगी?"—से हटाकर एक गतिशील प्रश्न में बदलने में निहित है: वार्मिंग का शिखर कितना अधिक होगा, ओवरशूट कितने समय तक चलेगा, और तापमान कितनी तेजी से घट सकता है?

उत्तर अभी भी मौलिक रूप से तत्काल उत्सर्जन कटौती पर निर्भर करता है। कार्बन निष्कासन, अनुकूलन, जलवायु वित्त और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग संक्रमण का समर्थन कर सकते हैं, लेकिन वे शमन को स्थगित करने को सही नहीं ठहरा सकते। इसलिए यह रिपोर्ट ओवरशूट की संभावना को जलवायु-नीति से इस्तीफे के बजाय अधिक तात्कालिकता के तर्क में बदल देती है।

